को प्राचली शली को है।

(ख) अर्धनारीश्वर — शिव की इस चतुर्भुजी मूर्ति का आधा दाहिना शरीर पुरुष का रूप आधा बांया भाग नारी का बनाया है। सिर का मुकुट मुख के दोनों ओर के भागों हाथों की बनावट और आभूषण वक्ष-स्थल तथा कमर तथा नितम्बों की आकृति और वस्त्राभूषण सभी दोनों और अन्तर दिखाई देता है।

(ङ) शिव ताण्डव (नटेश) — अष्टभुजी नटेश शिव की नृत्यमुद्रा ललित है। मुखाकृति पर ताण्डव नृत्य के तनाव का भाव नहीं है। बल्कि शान्ति के भाव है। शरीर रचना सहज है। साथ में पार्वती, गणेश, कार्तिकेय ऋषि, नन्दु ब्रह्मा विष्णु इन्द्र आदि देवता है। इस प्रतिमा में शिव की भुजा खंडित है।

(च) गंगा धर शिव — इस प्रतिमा में शिव के माथे पर गंगा का अवतरण दिखाया है उनकी जटाओं से गंगा व साथ में पार्वती खड़ी है निकट ही भगीरथ हाथ जोड़े खड़े है।

(छ) रावणानुग्रह तथा उमा महेश्वर — इसमें शिव को पार्वती दोनों पुत्रों, गणों तथा भक्तों के साथ कैलाश पर्वत पर बैठे दिखाया है। शिव की मुद्रा उदार व रावण को आवेश में कुपित होकर शिव पार्वती सहित कैलाश पर्वत को हिलाने का प्रयत्न करते दिखाया है। पर्वत के नीचे हजार वर्ष बन्दी बन जाने का दृश्य उत्कीर्ण है।

डा० पूर्णिमा वशिष्ठ
स० आचार्य ललितकला
विभाग, चौ० चरण सिंह वि०
वि० मेरठ

महेश्वर और शवयानुग्रह आदि मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय है। एलीफेंटा की अधिकतर मूर्तियों में गन्धर्वो के युगलों के अतिरिक्त ब्रह्मा, विष्णु, दिग्पाल, गणेश, कार्तिकेय एवं ग्रहो को भी उकेरा है।

(अ) त्रिमूर्ति - यह मूर्ति 18 फीट ऊँची है। तथा स्थूल होते हुए भी विभिन्न भावो को व्यक्त करती है। यह शिव के तीन रूपों की विशालकाय प्रतिमा है। मध्य मुख सौम्य और शान्ती के भाव है। दायी ओर के मुख की मांसपेशीयो में तनाव है। ऐंठी हुई मूँछे फूली नासिका, बड़े नेत्र जटाओ पर सर्प ज्वाला का प्रभाव है। बायी ओर की नारी की मुखाकृति मृदु एवं नारी सुलभ कमनीय है। बायी ओर का मुँह शिव के रौद्र रुप को मध्य का मुख शिव के ~~रौद्र रूप~~ कल्याण कारी रुप को तथा दाया मुख शान्ति का है और उनके चारी रुप को प्रस्तुत करता है। यह पाँचवी शती की अति सुन्दर व प्रभावशाली मूर्ति है। यह महेश मूर्ति के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस मूर्ति का मुकुट ऊँचा व भारी सज्जा से युक्त है।

(ब) कल्याण सुन्दर :-

यह शिव पार्वती विवाह के प्रसंग के इस प्रतिमा समूह में परिकर की आकृतियां कनौज की मूर्तियों जैसी है। इस प्रतिमा के मुख पर मन्द हास है। कमनीय शरीर वाली माँ गौरी नववधु की भांति संकुचित दिखायी देती है। शिव को विशाल कायशरीर व मुख मंडल के पीछे आभा मंडल दिखाया है। शिव के पास ब्रह्मा, विष्णु व गौरा के पास माँ तथा सेविकाए है। यह मूर्तियां वाकाटक शैली

①

Master of Fine Art - II Sem (Unit-III)

Sub - History of Indian Sculpture

Code - M.F.A 2002T

" राष्ट्रकूट राजवंश (750-973 ई०)

धार्मिक दृष्टिकोण से सातवी शती तक बौद्ध धर्म की प्रमुखता रही। उसके बाद यह पूर्वी भारत तक सीमित रह गया। बौद्ध धर्म के लोप होने के साथ ब्राह्मण धर्म की स्थापना हुई। इस धर्म के अनुयायी राजवंश शिव, विष्णु, सूर्य और शक्ति के उपासक थे मध्यकाल मे राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक मे जैन धर्म का भी विस्तार हुआ

वास्तु कला और मूर्तिकला के सन्दर्भ मे इस युग को स्वर्ण युग कहा जा सकता है। वास्तु कला की दृष्टि से सोमनाथ, दिलवाड़ा, कोणार्क भुवनेश्वर, पुरी, एलोरा, खजुराहो, एलीफैन्टा, कान्हेरी भारतीय मूर्तिकला के उत्कर्ष उदाहरण है।

दक्षिण के पश्चिमी भाग मे चालुक्यो के बाद राष्ट्रकूट शासको की सत्ता स्थापित हो इनके काल मे विशाल पहाडियो को काटकर गुफाओ और मन्दिरो का निर्माण हुआ तथा उनमे विशाल काय मूर्तियाँ भी उकेरी गयी।

" एलीफैन्टा -

मुम्बई गेटवे आफ इन्डिया से दस किमी० दूर समुद्र मे एलीफैंटा (धाराश्री) नामक एक द्वीप है। इसका निर्माण काल विवादास्पद रहा है इसे अनुमानतः 550 ई० से 8वी० या 9वी शताब्दी के बीच बना हुआ है इस गुफा मे त्रिमूर्ति नटेश (शिव ताण्डव) कल्याण सुन्दर, अर्धनारीश्वर उमा